ज्योतिसर तीर्थ

ज्योतिसर कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से 8 किलोमीटर दूर पेहवा राजमार्ग पर सरस्वती नदी के किनारे स्थित है ।

ज्योतिसर अर्थात् प्रकाश (ज्ञान रूपी प्रकाश) का सरोवर । महाभारत में वर्णित कौरवों-पाण्डवों का धर्मयुद्ध इसी स्थान पर हुआ था । लौकिक मान्यता के अनुसार ज्योतिसर वह भूमि है जहां पर भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के प्रारम्भ होने से पूर्व विषाद एवं मोहग्रस्त अर्जुन को गीता का दिव्य सन्देश देकर उसे कर्त्तव्य की ओर प्रेरित किया था । इस समय इसके तट पर अक्षय वट स्थित है । समीप में ही श्वेतसंगमरमर से निर्मित कृष्ण-अर्जुन का रथ सुशोभित है । लोक- प्रचलित मान्यता के अनुसार इसी पावन भूमि पर आदि शंकराचार्य जी ने श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन का मनन एवं चिन्तन किया था । सर्वप्रथम 150 वर्ष पूर्व कश्मीर के महाराज ने यहां एक शिव मन्दिर का निर्माण करवाया । तत्पश्चात् दरभंगा के महाराजा ने 1924 में अक्षयवट के चारों ओर एक पक्के चबूतरे का निर्माण करवाया । 1967 में कामकोटि पीठ के शंकराचार्य जी के प्रयास से कृष्ण अर्जुन रथ तथा शंकरायार्च जी के मन्दिर का निर्माण हुआ ।

इस तीर्थ के जीर्णोद्धार में कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के प्रयास सराहनीय रहे हैं । इसके जीर्णोद्धार पर बोर्ड ने अब तक 16 लाख 50 हजार रुपये खर्च किए हैं । बोर्ड तीर्थ के पुनर्निर्माण एवं उसे अधिक विकसित स्वरूप देने की दिशा में निरन्तर प्रयासरत है । अब यह व्यवस्था भी कर दी गई है कि इस सरोवर में यात्रियों को स्नान हेतु नरवाना नहर से निरन्तर शुद्ध एवं ताजा जल उपलब्ध होता रहे । हरियाणा पर्यटन ने ज्योतिसर में पेहवा मार्ग पर जल-पान गृह के साथ-साथ तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए एक विश्रामगृह का भी निर्माण किया है ।

यहां प्रत्येक वर्ष शीत ऋतु में मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी से प्रारम्भ होकर 18 दिनों तक गीता जयन्ती के समारोह आयोजित होते हैं सूर्यग्रहण के अवसर पर भी यहां तीर्थयात्री अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं । धन्य है गीता जैसे ज्ञान की प्रकाशिका ज्योतिसर की यह पावन धरा ।